झील में चंद्रमा

एवं अन्य एकांकी

लक्ष्मीनारायण लाल

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

झील में चंद्रमा एवं अन्य एकांकी

लेखक

लक्ष्मीनारायण लाल

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा० लि०

888, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग

नई दिल्ली-110 005 (भारत)

डा० लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी के अत्यंत सफल और बहुचर्चित नाटककार के रूप में जाने जाते हैं, दर्जनों नाट्य पुस्तकों के रचयिता डा० लाल के नाटकों में तरह-तरह के प्रयोग विद्यमान हैं। उन्होंने हिन्दी नाटक की परम्परा को विकसित किया और स्थापित भी किया। 1960 के बाद हिन्दी नाट्य लेखन के क्षेत्र में जो नाटककार आए उनमें डा० लाल एक महत्वपूर्ण नाटककार के रूप में जाने गये।

कहा जाता है कि डा० लाल के नाटकों में वह जीवंतता है जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में विद्यमान थी। 'अंधेर नगरी' की परम्परा के छोटे नाटक डा० लाल के लेखन की उपलब्धि रही है। हिन्दी में रोचक नाटकों के अभाव को डा० लाल ने पूरा किया जिसका अभाव हिन्दी नाटक के लिए कलंक माना जाता रहा है। बड़े नाटकों की जद्दोजहद के बीच उभरे डा० लाल के स्तरीय नाटक उनकी पीढ़ी के नाटककारों में अग्रणी स्थान रखते हैं। नाटक चाहे जैसे भी रहे हों, बड़े अथवा छोटे, डा० लाल ने नये से नये प्रयोग किये और चर्चा के केन्द्र में रहे। लोक नाट्य को जिन्दा रखने की लालसा ने डा० लाल को उस शिखर पर पहुँचाया जहाँ कम ही लोग पहुँचते हैं। "सगुनपंछी" इसका जीवंत उदाहरण है।

प्रस्तुत नाट्य-संकलन में मूल रूप से उन एकांकियों का संग्रह किया गया है जिनका सीधा सम्बंध बच्चों से है। परन्तु इन एकांकियों में व्यंग्य के माध्यम से समाज पर जो तीखे प्रहार किये गये हैं वह यह बताते हैं कि इन एकांकियों का सम्बंध बड़े बुजुर्गों से भी है। स्तरीय व्यंग्य और रोचक कथोपकथन इन एकांकियों की समग्रता है। बच्चों द्वारा मंचित किये जाने योग्य ये एकांकी पाठकों और नाट्य प्रेमियों के बीच विशेष चर्चित होंगे।

नवप्रकाशित कथा साहित्य

1.	लाल फूल	श्रीनिवास वत्स
2.	रात में पूजा	श्रीनिवास वत्स
3.	श्रुतसेन का परिचय	गौरव अग्रवाल
4.	तीन फूल	जयप्रकाश शर्मा
5.	बौनो का बंदी	प्रेमशरण शर्मा
6.	घुड़सवारी का चमत्कार	प्रवासी विनयकृष्ण
7.	अमर फल की तलाश	स्नेह अग्रवाल
8.	धर्मज्ञ तोते की कहानी	व्यथित हृदय

एकांकी क्रम

क्रम		पृष्ठ
1.	एक था भालू	1
2.	झील में चंद्रमा	19
3.	बंदर का खेल	32

1. एक था भालू

पात्र : **बाबा, सिन्हा, शेखी साहब, चंदर, शांतू,**

किसी नगर में पार्क का दृश्य। एक बेंच। आसपास झाड़ियां। सुबह के नौ बजे हैं। रंगपीठ पर दृश्य उभरने के साथ ही साथ बाबाजी, सिन्हा का अपने दोनों पौत्रों – चंदर और शांतू के साथ गाते हुए प्रवेश।

बम्म बम्म बम भाई बम बम बम।
ई जंगल में कितने रंग
बम्म बम्म भाई बम बम बम।।
हरी घास पै सोई पतंग
नौ सौ मोती नौ सौ रंग।।
बम्म बम बम्म भाई बम बम बम . .
बोल पतंग तू आई कहां से
खेल-खेल में किसके संग ?
बम बम्म बम भाई बम बम बम।।

(दोनों बच्चों द्वारा बाबाजी के हाथ से पतंग छीनने का प्रयत्न। बाबाजी हवा में पतंग उड़ा देते हैं।)

बाबा : जा पतंग, तू उड़ जा। आगे बोलो। तुक जोड़ो, जा पतंग, तू,तू उड़ जा . . .।

चंदर : हवा के ऊपर चढ़ जा।

शांतू : नहीं नहीं। हवा के भीतर जुड़ जा।

बाबा : शाबाश। उड़ का तुक जुड़ है। जैसे जुड़ का तुक गुड़ है।

चंदर : और गुड़ का तुक मुड़ है।

शांतू : *(खेलता हुआ)* उड़ . . जुड़. . गुड़ . . गुड़ . .।
(बेंच पर खड़ा होकर) बाबाजी, मुझे आज कोई ऐसी नई कहानी सुनाओ, जो कभी तुमने भी न सुनी हो।

चंदर

शांतू

चंदर

बाबा

शांतू

चंदर

शांतू

चंदर

बाबा

शांतू

चंदर

शांतू

बाबा

चंदर

बाबा

चंदर

बाबा

चंदर : पागल, जब सुनी नहीं तो सुनायेंगे कैसे ?

शांतू : मैं सुना सकता हूँ।

चंदर : अरे जा, रहने भी दे।

बाबा : चल, सुना।

शांतू : सुनाऊं ? एक था जंगल। जंगल में था एक भालू।

चंदर : भालू का नाम कालू।

शांतू : चुप रह।

चंदर : तू चुप रह।

(दोनों लड़ पड़ते हैं। बाबा का बीच - बचाव करना)

बाबा : बस, बस, बस।

शांतू : मुझे कहानी सुनाओ।

चंदर : नहीं बाबा, मेरे साथ खेलो।

शांतू : नहीं, मुझे कहानी सुनाओ।

बाबा : दोनों एक साथ कैसे होगा यार ?

चंदर : दोनों एक साथ करना होगा।

बाबा : दोनों एक साथ करना होगा।।
जंगल के भालू से भिड़ना होगा।

चंदर : भिड़ने से पहले मिलना होगा।

बाबा : देखो इसमें किस्सा और खेल दोनों है।

एक था भालू।
नाम था कालू।।
दौड़ो मुझको पकड़ो।
किस्सा सुनो और किस्सा खेलो।।
जो सुनेगा किस्सा।
खेल में लेगा वही हिस्सा।।
हाँ, तो एक था भालू।

नाम था कालू।।
कालू बड़ा ही चालू था
झाड़ी में छिप रहता था
गुप चुप बातें करता था
चटपटी। कचालू।

भालू। कालू।

दौड़ो-दौड़ो मुझको पकड़ो।
किस्सा सुनो और किस्सा खेलो।।

एक था भालू
नाम था कालू।।

(पृष्ठभूमि से किसी की पुकार आती है – "बी. पी. सिन्हा" बद्री प्रसाद)

रुको, कोई पुकार रहा है। *वही पुकार*। कौन ? जी हाँ, मैं यहाँ हूँ। कौन हैं आप ? आइए आइए, तशरीफ लाइए। *(वही पुकार)* अजी आप सामने तो आइए। कहाँ हैं आप ? कौन हो सकता है ? इस तरह मेरा नाम लेकर पुकारने वाला, इस शहर में ? मैं तो यहाँ बिना किसी नाम के हूँ। जी हाँ, मैं ही हूँ बी. पी. सिन्हा, जी, बद्री प्रसाद . . . . मैं यहाँ हूँ। आप कहाँ से पुकार रहे हैं ? सामने आइए न। जी आप कहाँ हैं ? कौन हैं ? . . जरा देखो तो आस पास। *(दोनों बच्चे इधर-उधर देखते हैं)* आवाज तो कुछ जानी-पहचानी सी लगती है।

कहीं कोई नहीं है बाबाजी।

कौन हो सकता है ?

भालू।

बाबा से मज़ाक करता है ?

तो बाबा, किसने पुकारा आखिर ?

हाँ, किसने पुकारा ?

छोड़ो। चलो खेलते हैं।

नहीं किस्सा—"स्टोरी"।

नहीं खेल—"प्ले"।

दोनों एक साथ ?

चंदर : यही तो हमारा प्रश्न है। क्या दोनों एक साथ संभव है ?

बाबा : शाबाश। ऐसा ही प्रश्न किया करो। देखो किस्सा और खेल, दोनों एक ही है। *(फिर वही पुकार)*

बाबा : कौन ? जी हाँ, मैं हूँ यहाँ। इस बार आवाज बिल्कुल पास से आई है।

चंदर : बाबा, तुम हमें उल्लू बना रहे हो।

बाबा : तुम लोग उल्लू हो ही.....।

(दोनों बच्चों का बाबा से लड़ना)

शांतू : शायद कोई भूत है।

बाबा : कहीं कोई भूत प्रेत नहीं होता। सिर्फ उल्लू होते हैं।

शांतू : होता है भूत मैंने टेलीविजन में देखा है।

चंदर : मैंने कितनी किताबों मे पढ़ा है। बाबा, तुम उल्लू हो।

शांतू : बाबा, तुम सठिया गए हो।

(बाबा का हंसना)

चंदर : बाबा, तुम्हें गुस्सा नहीं आता ?

बाबा : क्यों ?

चंदर : तुम्हें गुस्सा नहीं आता, जभी तो हमारे स्व. प्रधानमंत्री राजीव गांधी को नहीं आता था। कोलम्बो में सिपाही ने मारा, प्रधानमंत्री मुस्करा कर आगे बढ़ गए।

बाबा : अरे बेवकूफी पर गुस्सा नहीं किया जाता, हँसा जाता है।

चंदर : तो बाबा, तुम्हारी बेवकूफी पर हँसू ?

बाबा : अच्छा, मैं बेवकूफ हूँ ? बेवकूफ मायने ?

चंदर : मायने तो नहीं जानता, पर जानता हूँ बेवकूफ कौन है। इसीलिए मुझे कोई बेवकूफ नहीं बना सकता। मैं दूसरों को बेवकूफ बनाना जानता हूँ। अच्छा बाबाजी, ये बताइए आप राजीव गांधी को जानते हैं ?

बाबा : हाँ क्यों नहीं ?

चंदर : उनसे मैं मिल सकता था ?

बाबा : उन्हें चिट्ठी लिखकर।

चंदर : टेलीविजन में देखता था वो काफी स्मार्ट थे। शेखी

बाबा : अपनी पढ़ाई-लिखाई में तो ध्यान है नहीं। बेमतलब की बातों में. .। सिन्हा

चंदर : देखा, मैंने आपको बेवकूफ बना दिया न। ह हा हा, आप में क्रोध जगा दिया। ऐसा क्रोध जिसका कोई मतलब नहीं, हा हा हा। शेखी

(चंदर और शांतू का हंसना। बाबा का हतप्रभ रह जाना। फिर वही पुकार।) सिन्हा

शांतू : अच्छा बाबा, ये बताओ – री० सी० के मायने क्या ? शेखी

चंदर : मैं बताऊँ ? री० सी० के मायने रिमोट कंट्रोल। सिन्हा

शांतू : बाबा हार गए। बाबा बाबा हार गए। शेखी

(दोनों बच्चों का हंसते खेलते हुए दृश्य से बाहर चले जाना। झाड़ी मे से उस व्यक्ति का प्रकट होना जो पुकार कर छिप गया था) सिन्हा

बाबा : कौन ? कौन हैं आप ? यहाँ क्यों छिपे थे ? छिपकर . . .। शेखी

शेखी : मौका देख रहा था। बद्री प्रसाद सिन्हा, मुझे पहचाना नहीं ? मैं तुम्हारा साथी शेखी चांदना...। सिन्हा

बाबा : शेखी चांदना ? शेखी

शेखी : कमाल है बद्री प्रसाद, शेखी चांदना को तुम भूल गए ? याद करो, सबसे पहले इलाहाबाद का ए० जी० आफिस। फिर जुडीशियल सर्विस। फिर रेलवे। ट्रैफिक की क्लास वन सर्विस . . .। सिन्हा

सिन्हा : ओ चांदना साहब। "सॉरी सर"। आपको तो पहचान ही नहीं पाया। शेखी

शेखी : कैसे पहचानोगे। बेटे, बहू पोतों में इतने फँस गए हो प्यारे कि अपनी भी सुधबुध नहीं। बताओ, कैसे हो ? सिन्हा

सिन्हा : बिल्कुल ठीक।

शेखी : वजन कितना है। शेखी

सिन्हा : कभी तोला नहीं। सिन्हा

शेखी : बी. पी. कितनी है ? डाक्टर की लैटेस्ट रिपोर्ट कैसी है ? शेखी

सिन्हा : यार चांदना, तुम कैसी बातें कर रहे ? ये भी कोई बाते हैं पूछने की। चलो घर चलें।

शेखी : तुम्हारा भी कोई घर है ?

सिन्हा : क्यों, मेरा ही घर है। सब अपना है। *(देखकर)* भाई, तुम बिल्कुल बदल गए। लगता ही नहीं, तुम . तुम हो।

शेखी : मेरे दाँत बड़े -बड़े थे न ? सब निकलवा कर ठीक कर लिया। सफेद बाल "डाई" कर...। पहनावा भी बदल दिया।

सिन्हा : मतलब फिर जवान।

(हंसना)

शेखी : सिन्हा, तुम से मुलाकात आखिर हो ही गई। "हाउ इज लाइफ" ?

सिन्हा : मुझे पुकार कर छिप क्यों गए ?

शेखी : इसलिए कि तेरी दुर्दशा अपनी आँखों से देख लूँ।

सिन्हा : अच्छा बैठो, बैठो।

शेखी : पार्क की बेंच पर बुड्ढे बैठते हैं।

(देखते रह जाना)

सिन्हा : यहाँ कैसे आए ? मेरा पता कैसे मिला ?

शेखी : बी. पी. . . "यू नो" . . . मुझे पता था, तुम यहीं हो सकते हो प्यारे तुमसे एक बार मुझे मिलना ही था। तुम जैसा नेक ईमानदार।

सिन्हा : छोड़ो यार, जो बीत गयी सो बीत गई।

शेखी : जी जनाब, अभा तो शुरू हुई।

सिन्हा : मज़ाक छोड़ो।

शेखी : तुम्हारा खयाल है, मैं इतनी दूर से मजाक करने आया हूँ। मेरे साथ रहे हो, इसलिए तुम्हें आगाह करने आया हूँ। ज्यादा वक्त नहीं है मेरे पास।

सिन्हा : यहीं से वापस चले जाओगे ? ऐसी भी क्या बात। देखो–मेरी कोठी। वो सफेद रंग की–दो मंजिली। सिर्फ पांच लोग हैं। सात बेडरूम हैं। हर कमरे के साथ बाथरूम। मेरा बेटा, मेरी बहू, मेरे पोते। मुझे किसी चीज की कमी नहीं। परमात्मा ने मुझे इतना दिया, वाह। चलो तो घर। कार से छोड़ आऊंगा। जहाँ चाहोगे।

शेखी : ये परमात्मा कहाँ से आ गया बीच में ? तुमने कमाई की।

सिन्हा : सब कृपा उसी की है।

शेखी : फिर तो मैं जाता हूँ। तुम से कोइ क्या बात करे . . परमात्मा। नानसेन्स।

(सिन्हा की हंसी)

सिन्हा : आजकल कहाँ हो ?

शेखी : ये भी कोई सवाल है ? सिन्हा, "आई मस्ट से" तुम में कोई समझदारी नहीं है।

(दोनों बच्चों का आना)

शेखी : ऐसे घूर-घूर कर क्या देख रहे हो ? मैं तुम्हारे बाबाजी का दोस्त हूँ। लेकिन इस जैसा सीधा सादा नहीं। क्या नाम है तुम्हारा ?

चंदर : तुम्हारा नाम क्या है ?

सिन्हा : ऐ, ऐसे बोलते हैं बड़ों से ? माफी माँगो।

शेखी : अरे, बद्री प्रसाद छोड़ो भी। ये बच्चे नहीं, बुड्ढे हैं बुड्ढे। बच्चे तो तुम हो इनके। देखते नहीं कैसे पाठ पढ़ाते हैं तुझे।

बाबा : सच, ऐसी-ऐसी बातें करते हैं ये लोग।

शेखी : मुफ्त में माल काटने को मिला है न। इनकी पढ़ाई–लिखाई इनकी ममी करती होगी। खेल-तमाशे बाबाजी के जिम्मे। जनम से लाट साहब बने हैं।

(छोटा, तिपहिया साइकिल चला रहा है। बड़ा बंदूक चला रहा है)

बाबा : अच्छा, तुम लोग घर जाओ।

चंदर : इसके साथ तुम्हें अकेला छोड़कर ?

शांतू : ये कौन है बुड्ढा ?

शेखी : क्या कहा ? भागते हो नहीं.? मुझे ये समझ रखा है। *(दौड़ा लेना, बच्चों का मजा लेना)* मुझे ये बत्तमीजी बिल्कुल पसंद नहीं। गेट आउट। आई से गेट आउट।

सिन्हा : इधर आइए। बच्चे हैं।

शेखी : बत्तमीज हैं। ऐसे होते हैं बच्चे ?

सिन्हा : छोड़ो भी।

शे खी : मुझे बच्चे बिल्कुल नापसंद। मतलबी। "सेल्फिश" . . . " इक्सप्लायटर्स "

(बच्चों का चिढ़ाना। शेखी का क्रोध करना। सिन्हा का संभालना)

शेखी : सिन्हा, तुम कैसे इन बत्तमीजों के साथ रहते हो ? मैं जा रहा हूँ। बर्दाश्त के बाहर है।

सिन्हा : माफ करो। . . ये चुपचाप। उधर जाओ।

शेखी : तुम्हारी बात मानते हैं ?

सिन्हा :
शेखी :
बाबा :
शेखी
चंदर
शेखी
चंदर
सिन्हा
चंदर
शेखी
चंदर
शेखी
सिन्हा
शेखी
बाबा
शेखी
सिन्हा
शेखी
सिन्हा
शेखी
सिन्हा
शेखी
सिन्हा
शेखी

सिन्हा : कभी-कभी।

शेखी : इन्हें बर्दाश्त कैसे करते हो ?

बाबा : आओ इधर आओ। बैठो।

शेखी : ऐ, उधर जाकर खेलो। हम थोड़ा बात करेंगे।

चंदर : तो बात करो न।

शेखी : तुम लोग "डिस्टर्व" कर रहे हो।

चंदर : तुम हमें डिस्टर्व कर रहे हो।

सिन्हा : चंदर

चंदर : चिल्लाओ नहीं।

शेखी : बड़े बत्तमीज बच्चे है।

चंदर : यू शटअप।

शेखी : सिन्हा, "आई मस्ट से"—तुमने इन्हें बर्बाद किया, खुद अपने आप को बर्बाद किया। देखो क्या सूरत बना रखी है अपनी।

सिन्हा : मैंने अपने आपको बर्बाद किया ? क्या कहते हो ?

शेखी : बच्चों के मुँह से अपने आपको बाबा-नाना सुनने का मतलब जानते हो ? अपने को और बुड्ढा महसूस करना।

बाबा : क्या ?

शेखी : बाबा-नाना कहकर बच्चे हमें बुड्ढा बनाते हैं। "यू नो"। बिल्कुल सही कह रहा हूँ। चलो, भगाओ इन्हें यहाँ से। ऐ, चलो भागो।

सिन्हा : इनके मां–बाप दफतर गए हैं। इनके स्कूलों में आज छुट्टी है।

शेखी : छुट्टी है तो खेलें अपने आप। तुम्हें क्यों परेशान कर रहे ? इनके नौकर हो क्या ? तुम्हारी अपनी कोई जिन्दगी नहीं ?

सिन्हा : यह मेरी ही जिन्दगी है। मेरे ही बच्चे हैं। छोड़ो। बताओ, कैसे हो, कहाँ हो ?

शेखी : मैं फर्स्टक्लास हूँ। इन चक्करों मे बिल्कुल फँसा नहीं हूँ।

सिन्हा : पर हो कहाँ ?

शेखी : ऐसी जगह, जहाँ मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं किसी पर। मजे से अपनी जिन्दगी जीता हूं।

जैसे चाहूँ। कोई मेरी आजादी मे दखलंदाज़ी नहीं कर सकता।

सिन्हा : तुम करते क्या हो ?

शेखी : कुछ भी नहीं। मज़े करता हूँ।

सिन्हा : कुछ तो करते हो। वरना समय कैसे कटता है ?

शेखी : जो गुलाम हैं–काम वही करते हैं। काम करना या तो जानवरों का काम है या मशीन का–यू नो। मुझे मालूम है– तुमने जिन्दगी भर काम किया है। बिना काम के तुम जिन्दा नहीं रह सकते। काम की गुलामी तेरी जिन्दगी है सिन्हा।

सिन्हा : नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

शेखी : माई डियर बद्री, मुझे बेटा-बहू के सारे चोंचले मालूम हैं। पिताजी के चरण स्पर्श कर लिए, पिताजी, कैसे हैं आप ? जरा मंदिर हो आइए, आज दलिया बना दूँ या मूँग की खिचड़ी, पिताजी, अरे आज तो आपका ब्रत है, जाइए कहीं घूम आइए। कहीं घूम आइए न, वगैरह-वगैरह खोखली बातों में फंसाकर उल्लू बनाते हैं ये नमक हराम लौंडे–यू नो।

(शेखी की बातों से सिन्हा की हंसी)

शेखी : ऐ लौंडे, घूर-घूर कर देख क्या रहे हो ? चलो फूटो यहाँ से।

चंदर : अंकल, आप पेड़ पर रहते हो ?

शेखी : कितने डिप्लोमेट हैं–देख लो सिन्हा। मुझे अंकल कह रहे हैं और तुम्हें बाबा। मुझे अंकल, तुम्हें बाबा।

चंदर : अंकल आपके पाकेट में क्या है ?

शेखी : देखा ? ये चोर हैं। "रिमोट कंट्रोल" की संतान हैं।

चंदर : आप गाली क्यों बकते हो ?

शेखी : मुझे कोई डर नहीं। न किसी की परवाह।

शांतू आपकी पाकेट में चाकलेट है।

शेखी : देख लिया। ये चोर भी हैं और डाकू भी।

(चाकलेट निकालकर फेंकना। दोनों बच्चों में चाकलेट के लिए संघर्ष)

शेखी : सिन्हा, यही सलूक करना चाहिए इनके साथ। लड़ाओ। खुद तमाशा देखो। मज़े लो। मैं यही करता हूँ।

चंदर : अंकल, अगले जनम में आप भालू होंगे। मदारी आपको नचाएगा, बच्चे मज़े लेंगे।

मशीन
जिन्दा

र लिए,
खिचड़ी,
इए न,
नो।

अंकल,

लो। मैं

ो।

शेखी : मुझे कोई यकीन नहीं अगले जनम में।

चंदर : बाबा ये बड़े फनी हैं।

शेखी : बाबा और नाना, इन अल्फाजों पर कभी गौर किया है ?

बाबा : ये अल्फाज नहीं, रिश्ते हैं।

शेखी : ओ हो। तुम जैसे जवानी में "इमोशनल इडियट" रहे हो सिन्हा, वैसे ही आज हो। याद है, जब हमारी दूसरी पोस्टिंग हुई थी देहरादून में। तुम्हारी पी० ए० थी वह कश्मीर की कली–क्या नाम था, . . . वो कुछ मौसम से ताल्लुक रखने वाला नाम था ' वो . . तुम्हें याद होगा यार, तुम इमोशनल इडियट के साथ ही साथ अव्वल दर्जे के "हिपोक्रैट" भी रहे हो, यू नो।

सिन्हा : ऐ बच्चे, जाओ उधर खेलो।

शेखी : ओ हो सिन्हा, तुम इन्हें बच्चा समझते हो ? टेलीविजन ने इन्हें सब कुछ सिखा दिया है।

सिन्हा : फिर भी इनके सामने, मेरा मतलब. . .।

शेखी : ऐ बच्चे, इधर आओ। ये लो जाकर चार पैकेट "च्यिइंगम" खरीद लो। दो आज के लिए दो कल के लिए।

(लेकर बच्चे खुशी से जाते हैं)

शेखी : देखा, किस कदर घूसखोर हैं। और हों भी क्यों नहीं। जनम लेते ही सुन रहे हैं–बोफोर्स कांड, स्विज बैंक, फेयरफैक्स . . .।

बाबा : भाई वो वासंती रैना . .

शेखी : देखा, पेट में छिपा रखा था नाम। वासंती ने एक दिन तुम्हें कहवा क्या पिला दिया कि तुम छिपे-छिपे लड्डू फोड़ने लगे।

(शेखी का सिन्हा के साथ खेल, मजाक)

शेखी : हाँ तो सिन्हा, तुम बाबा-नाना का मतलब जानते हो ? बाबा का मतलब है–बाई-बाई–अब खिसको यहाँ से। अब तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं। पहनो पुराने कपड़े नौकरों की तरह। मरने का करो इन्तजार। बा बा बा बा . . . **बा** . . छी : छी : छी :। रहो। उधर कोने में जाकर बैठो चुप। बा बा. . . बा . .बा **और ना ना** ? उसे छुओ ना। उधर देखो ना। उसे खाओ ना। उसे पहनो ना। हँसो ना। **गाओ ना**। ना ना ना ना। बा बा बा बा . . बस . . बस. . बस। साला। मर मर के कमाई हमने की। भोगने का समय आया तो ना ना ना ना। बस बस बस बाबा बाबा बा।

(बाबा का लगातार हँसना)

शेखी : इतने में थक गए। अरे सिन्हा, प्रोटीन खूराक लिया करो। अंडे, चिकन, फल, दूध, चीज . . . और किसी "जानी" का साथ . . यू नो,। वैसे तुम क्या खाते पीते हो ? मैं बता सकता हूँ। दलिया, मूँग की खिचड़ी, लौकी, तोरई, साग अरहर की पतली दाल में रोटी भिगोकर पेट भरना। मंगल और शनि का ब्रत। सुबह शाम राम-राम, हरे-हरे कहकर दास मलूक स्मरण– अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काज, दास मलूक कहि गए, सबके दाता राम। बकवास। इन संतों को तो "वैन" कर देना चाहिए। खासकर पूर्वी यू० पी० और बिहार में। जहाँ के तुम हो। भूजा चबेना और सत्तू खिलाकर मार डाला सालों ने। न काम किया न भोग, जीवन को समझ लिया रोग। ऐसे मरभुखे संत हिन्दुस्तान के किसी और जगह क्यों नहीं हुए ? बद्री प्रसाद सिन्हा सोचो। विचार करो। कहाँ आ फँसे ? अपने आप को बुड्ढा कैसे समझ लिया ? सरकार ने साठ साल की उम्र में रिटायर कर दिया, इसलिए ? बेटे ने दो बच्चे, और बेटी ने दो बच्चियाँ पैदा कर दीं, इसलिए ? अरे, ये सब साजिश है। "रिटायरमेंट" है पोलिटिकल साजिश, और बेटा-बेटी संतान हैं एकॉनामिक साजिश, मतलब साफ है–अब आप बाबा और नाना हो गए– मतलब अब आप मर जाइए। अपनी कमाई हमें भोगने दीजिए। लो इस शीशे में अपनी शक्ल देखो। वाकई बुड्ढे हो ? देखो।

सिन्हा : *(शीशे में देखते हुए)* नहीं बिल्कुल नहीं। वाह, कितने दिन हो गए, अपने आप को देखा नहीं।

शेखी : सावधान ब्रदी प्रसाद, अगर कोई तुम्हें बाबा या नाना कहे, तो उसका सिर फोड़ दो साले का। साला हो या साली। ये लो चाकलेट खाओ।

बाबा : चाकलेट ? मैं और चाकलेट ? ये तो बच्चे खाते हैं।

शेखी : लो खाओ भी। सब अच्छी चीजें बच्चों के लिए, क्या साजिश है।

बाबा : *(लेकर)* ये "नानबेजिटेरियन" तो नहीं ?

शेखी : बद्री प्रसाद सिन्हा, खाओ,। मुँह धीरे -धीरे चलाओ।

(दोनों का चाकलेट खाना)

शेखी : तुमने अभी तक किया ही क्या ? सोचो, कुछ किया ? सिर्फ यही–चालीस साल की उम्र में विधुर होकर बेटा-बेटी पाला। पढ़ाया। उनके घर बसाए। अब उनके बच्चे खिला रहे। इसके अलावा कुछ किया हो तो बताओ।

सिन्हा : हाँ यार, और तो कुछ नहीं किया। *(सीना तानकर चलने लगना)* यार, शेखी चांदना, ये बताओ, चाकलेट में कुछ ऐसा वैसा तो नहीं डाला था ? हे भगवान।

शेखी : खबरदार, भगवान का नाम बुड्ढे लेते हैं।

सिन्हा : बुढ़ापे से बेतरह डरे हुए हो।

शेखी : मुझे तो बूढ़ा होना ही नहीं।

सिन्हा : बूढ़ा होना मुझे संगीत की तरह लगता है। आलाप से शरू होकर सम पर आना। मेरा बेटा, बहू, नाती, पोते, भतीजे, भांजे–सब मेरे लिए संगीत-साज हैं। (*रुककर*) मेरी आवश्यकताएँ बहुत कम हैं। संतुष्ट व्यक्ति हूँ यार। अब और कुछ नहीं चाहिए।

शेखी : यानी, मरने के इंतजार में हो।

सिन्हा : मुझे किसी का इंतजार नहीं। जो है, वही हूँ मैं। जो नहीं है, नहीं है।

शेखी : तुमने दरअसल जीवन देखा ही नहीं, तभी बड़बोलापन है तुममें। ये एक तरह का "इस्केप" है।

सिन्हा : जो चाहो कह सकते हो, बहस नहीं करता। पर ये सच है, मेरा सुख, सुख से भी बड़ा है।

शेखी : मेरे साथ चलो–सुख क्या है, पता चल जाएगा।

सिन्हा : तुम्हारे साथ चलने को मैं तैयार हूँ। लेकिन सुख के लिए नहीं, दोस्ती के लिए।

शेखी : हाथ मिलाओ।

(हाथ मिलाना। जोर आज़माइश। शेखी की शेखी धूल में)

शेखी : ओ बूढ़े। बूढ़ा। बूढ़ा।

सिन्हा : देख लिया न बुढ़ापे का मजा ?

शेखी : बचपना और बुढ़ापा–मुझे इन दोनों से नफरत है। बच्चे और बूढ़े–बोर कहीं के। एक को होस्टल में, दूसरे को हास्पिटल में।

सिन्हा : और तुम जैसे जवानों को ?

शेखी : बाकी सारी दुनियाँ अपनी। कोई बाबा-नाना कहने वाला नहीं। (*रुककर*) अब सुनो मेरी बात गौर से। चलो मेरे साथ। तुम्हारे लिए नए कपड़े ले आया हूँ। हवाई जहाज का टिकट है तुम्हारे नाम।

(लाकर दिखाना)

सिन्हा : इसकी क्या जरूरत। मेरे पास सब कुछ है भाई।

शेखी : अजी छोड़ो। जब से रिटायर्ड हुए हो, कोई नया कपड़ा बनवाया ? कहीं यात्रा की ? कोई शौक पूरा किया ? तो सुनो। कल इसी समय इसी जगह अकेले आना। चलो यहाँ से।

सिन्हा : पर कहाँ ?

शेखी : एयर टिकट पर लिखा है।

सिन्हा : देखूँ। अरे, कहाँ जाना है, कुछ नहीं लिखा।

शेखी : जहाँ चाहो जा सकते हो आजाद पंछी।

सिन्हा : पर बेटा-बहू से तो पूछना ही होगा।

शेखी : तुम्हारी जिन्दगी तुम्हारी है या बेटा-बहू की ?

सिन्हा : मेरी जिन्दगी सब की है।

शेखी : ओफो हो। सिन्हा। तुम उलजलूल बातें छोड़ो। तुम्हारे पास किस चीज की कमी है ? तीन लाख रुपये तुम्हारे नाम हैं एफ.डी. में। ढाई हजार तुम्हारी पेंशन है। मुझे मालूम है। तुम अव्वल दर्जे के कंजूस हो। किसी को बताने की जरूरत नहीं। अकेले चुपचाप आ जाना। कल बच्चों का स्कूल खुला है। कोई पूछने वाला नहीं है—यू नो।

(धीरे-धीरे प्रकाश जाता है। संगीत। सिन्हा का नए वस्त्रों मे आना। इधर-उधर देखना। कहीं शेखी को न पाकर पुकारना)

सिन्हा : शेखी चांदना। शेखी साहब। मैं आ गया। शेखी साहब। (*बेंच पर एक कागज उठाकर पढ़ना*) अकेले जाना पड़ेगा ? पर कहाँ ?

(पृष्ठभूमि से शेखी का स्वर)

शेखी : ये फैसला अकेले तुम्हें करना होगा।

सिन्हा : मैं तेरी तरह अकेला नहीं हूँ। तू है कहाँ ? मजाक छोड़। इसी समय मिलकर चलने को कहा था . . .

शेखी : मैं किसी का साथ नहीं दे सकता।।

सिन्हा : मेरे पास आ। सामने बातचीत कर।

शेखी : मुझे डर लग रहा है।

सिन्हा : डरने की कोई बात नहीं यार। प्लीज कम। मैं चलने को तैयार होकर आया हूँ।

शेखी : किसी ने रोका नहीं ?

सिन्हा : सब मेरे साथ हैं।

(शेखी आधा दिखाई पड़ने लगना)

शेखी : सब माने ?

सिन्हा : जो हैं मेरे साथ। जो मुझ पर विश्वास करते हैं।

शेखी : विश्वास ? विश्वास क्या चीज है ? अंग्रेजी में अनुवाद कर समझाओ।

सिन्हा : विश्वास का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हो सकता। शेखी

शेखी : मुझे "लॉजिक" से समझाओ। सिन्हा

सिन्हा : तुम्हारी दुनिया "लॉजिक" की है—"डाइलेक्टिस" की। मेरी दुनिया "मिथ" की, कथा की है। शेखी

शेखी : बद्री प्रसाद सिन्हा, तेरी भाषा मेरी समझ मे नहीं आती। "यू आर एन इडियट।" सिन्हा

सिन्हा : पास आओ। उतनी दूर क्यों खड़े हो ?

शेखी : बताया न मुझे डर लगता है। मुझे किसी पर यकीन नहीं। तुझ पर भी नहीं। सारे रिश्ते मार्केट के रिश्ते हैं। कहीं कोई भावना नहीं। सारे मूल्य पैसों की बुनियाद पर बने हैं।

सिन्हा : मेरे पास आओ। चंदर

शेखी : मैं किसी के पास नहीं जाता। न किसी को अपने पास आने देता हूँ। शांतू

(पास आना) चंदर

सिन्हा : बैठो तो। बाबा

शेखी : मैं बैठ नहीं पाता। चंदर

सिन्हा : क्या हो गया ?

शेखी : तुम खामखा सवाल करते हो। किसी सवाल का कोई जवाब नहीं होता। तुम अपनी जगह हो, मैं अपनी जगह। सवाल अपनी जगह। यू नो, बड़ा चक्कर है . . तुम्हें कुछ भी पता नहीं। बाबा शांतू

सिन्हा : चलो, तुम्हे पता है न। फिर इतना डर क्यों ? बताऊँ ? बुरा तो नहीं मानोगे ? तुम्हारे पास "जजमेंट" है, "नौलेज" नहीं। "नौलेज" की बुनियाद तो जिज्ञासा है—बच्चा . . . जो बुढ़ापे की तरफ जाना चाहता है। बच्चा, जो दूसरों पर विश्वास करता है। बाबा चंदर

शेखी : फिर वही अलफाज, जिसे मैं नहीं जानता। न जानना चाहता हूँ। मेरे पास फजूल का वक्त नहीं। बाबा

सिन्हा : इतना तो कह लेने दो—मेरे पास आए, यह तुम्हारी कृपा है। तुमने कहा, चलने को तैयार हो गया। कोई तर्क नहीं। चंदर

शेखी : यही तुम्हें डुबाएगा। बाबा

सिन्हा : जो ईश्वर को मंजूर होगा। चंदर

शेखी : फिर ईश्वर का नाम लिया तो खोपड़ी तोड़ दूँगा। *(खाँसी का दौरा / साँस फूलना / सिन्हा का मदद के लिए बढ़ना / शेखी का लड़खड़ाकर गिरना।)* बाबा

शेखी : खबरदार पास आना नहीं। दया करने की कोशिश की तो . .। (*साँस फूलने का दौरा पड़ना*) मेरे पास नहीं आना। छूना नहीं।

सिन्हा : तुम्हारे पास हूँ। घबड़ाओ नहीं।

शेखी : नहीं। नहीं। नहीं।

सिन्हा : हाँ। हाँ। हाँ शेखी चांदना, तुम कुछ भी कहो, कुछ भी करो, जो कुछ भी हो चांदना, अंत मे तुम वही हो।

(पृष्ठभूमि में चंदर और शांतू का स्वर– "बाबाजी" बाबाजी तुम कहाँ हो ? उन्हें आते हुए देखकर शेखी का भागना। संगीत। स्कूल की ड्रेस मे दोनों बच्चों का आना। दोनों बच्चों का बाबा के अंक से लग जाना)

चंदर : तुम कहाँ थे ?

शांतू : जाओ, हम नहीं बोलते।

चंदर : तुम अकेले यहाँ क्यों बैठे हो ?

बाबा : तुम्हारे इंतजार में।

चंदर : झूठे कहीं के।

(बाबा से दोनो बच्चों का लड़ना)

बाबा : अरे, सुनो तो। यहाँ एक भालू आया था।

शांतू : कहाँ गया ?

बाबा : तुम्हें देखते ही भाग गया।

चंदर : झूठ। फिर वही झूठ।

(फिर वही लड़ना। रुठना।)

बाबा : सच, बिल्कुल सच।

चंदर : जाओ, हम नहीं बोलते।

(दोनों बच्चे रूठकर जाने लगते हैं, बाबा का रोककर)

बाबा : अच्छा बाबा, कहानी सुनो, सही सही। एक जंगल था। उसमें था एक भालू।

चंदर : नाम था कालू ?

बाबा : कुछ भी नाम रख लो, क्या फर्क पड़ता है। हाँ, तो भालू था एक। जंगल में अकेला एक

आदमी जा रहा था। भालू मिला उसे। भालू ने पूछा–जंगल में अकेले डर लग रहा है ? चलो, मेरे साथ। जंगल के बाहर कर आऊंगा। आदमी ने कहा–बहुत अच्छा, चलो। दोनों साथ-साथ चले। रास्ते मे भालू ने कहा–हे आदमी, मुझे भूख लगी है। मैं तो तुम्हें खाऊंगा। क्यों भाई, तुम तो मेरे साथी हो। अपने साथी को कोई खाता है ? भालू ने कहा–मेरी यही आदत है। तुम्हें न खाऊंगा तो जिन्दा कैसे रहूँगा। आदमी ने कहा–लो भाई, खा लो मुझे। वह जैसे ही खाने चला, उसे दो बच्चे दिखाई दिए। बच्चों को देखते ही भालू डर गया। जंगल में भाग गया।

चंदर : फिर क्या हुआ ?

बाबा : बताओ, फिर क्या हो सकता है ?

चंदर : पहले हमें अपने कंधे से लटकाकर झूला झुलाओ।

(बाबा के दोनों कंधों से उनका लटकना। बाबा का घुमाना)

बाबा : बा . . बा . . बा . . बा . . ।

दोनों : ना . . ना . . ना . . ।

बाबा : ना . . ना . . ना . . ।

दोनों : ना ना नहीं . . हाँ . . हाँ हाँ . . ।

(दोनों बच्चों को अंक में भर लेना। संगीत के साथ पटाक्षेप)

2.

झील में चन्द्रमा

पात्र : **स्कूल के बच्चे, मैडम, बंदर, भालू, शेर, चिड़िया, हाथी, चन्द्रमा।**

(पृष्ठभूमि से संगीत। उसी संगीत पर थोड़ी ही देर बाद भीतर से रंगभूमि पर बच्चों लड़के -लड़कियों, दोनों का गाते हुए आना)

पिकनिक निक निक।
पिकनिक पिक पिक।।
पिक पिक पिकनिक।
निक निक पिक पिक।।

पहला : पिकनिक को हम जायेंगे।
जमकर मौज उड़ायेंगे।।

सब : पिक पिक पिकनिक।
पिकनिक निक निक।

(पहले लड़के और पहली लड़की के पीछे सब दौड़ते हुए।)

टिक टिक टिक टिक।
टिक टिक टिक टिक।।
पिक निक पिक पिक्।
टिक टिक टिक टिक।।

पहली : न कोई इंगलिश न कोई साइंस।

सब : बाओ बाओ। हैप्पी टाइम्स।

(दौड़ना)

पहली : न कोई नम्बर्स, न कोई राइम्स।

सब : बाओ बाओ। हैप्पी टाइम्स।

(दौड़ना)

पहला : भारी बस्ता मारो किक्स।

सब : येस येस, वी आर सिक।।

(दौड़ना)

पहली : टूक टुक टुक टुक। रिबृटपिट रिबृटपिट।

सब : बाओ बाओ। आये आये।
हम आ आ आ आये।।

(दौड़ते हुए कुछ बच्चे एक ओर, कुछ उनके सामने। आमने-सामने। पी० टी० टीचर बीच में)

मैडम : अब बोलो। अब बोलो।
रेस्ट करो या खेल करोगे ?

सब : नहीं मैम, हम खेल करेंगे।

मैडम : क्या ? क्या खेलोगे ?
बोलो। बोलो।

पहला : आइस पाइस।

पहली : बिल्ली चूहा।

दूसरा : म्याऊं म्याऊं।

तीसरा : शेर भालू।

चौथा : नो नो नो, कड़क्को।

मैडम : ह्वाट कड़क्को ? कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ ?
क्या देखते मुड़ मुड़ मुड़ मुड़ ?

पहला : अरे रे रे बंदरमामा।

(बंदर-प्रवेश)

पहली : अरे रे रे चिड़िया श्यामा।

(प्रवेश)

दूसरा : अरे रे रे भालू।

(प्रवेश)

दूसरी : अरे रे रे शेर।

(सबका रंगभूमि पर प्रवेश)

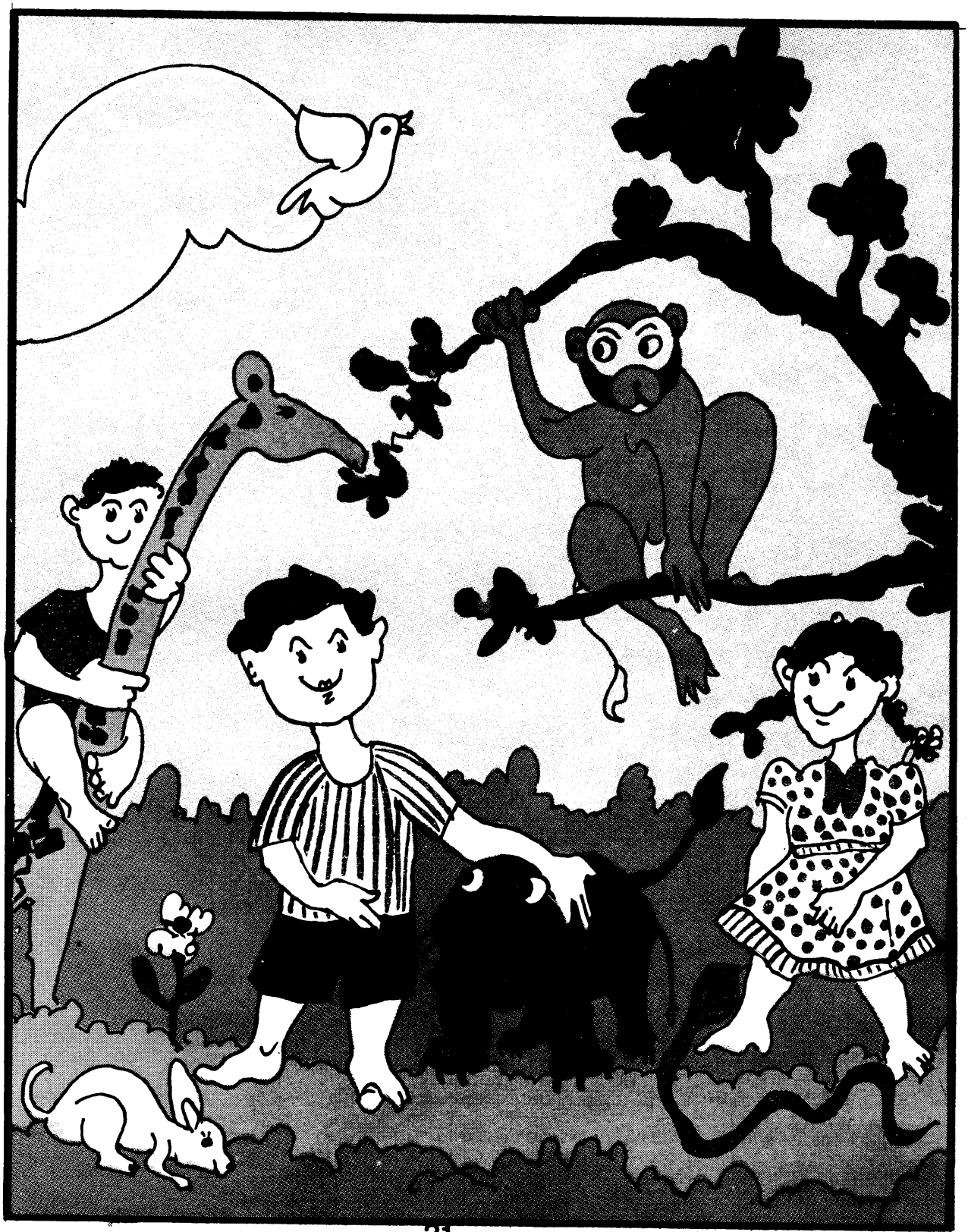

मैडम : अब करो पिकनिक।
जब जंगल मे आये
तो करो पिकनिक।

बदर : आऊं माऊं दही जमाऊं।

मैडम : बंदर मामा दही जमाऊं ?

पहला : वंडरफुल भाई वंडरफुल।

चिड़िया : खी खी खी खी खी खी खी।
मैं तो खाती पूड़ी घी।

सब : अच्छा।

भालू : हुड़ हुड़ हुड़ हुड़
चलो पतंग उड़ायें।
काटे मंझा गाना गायें।

शेर : हो हो होअ।
मैं इस जंगल का राजा
मेरा नाम शेर।
चलो कोई खेल खेलें
मत करो देर।।

सब जानवर : हाँ, बिल्कुल ठीक।

चिड़िया : मैं बनूंगी मैडम।
मैं बजाऊं सीटी।

(मैडम से सीटी लेकर बजाना)

पहला : इनके साथ क्या खेलेंगे ?

पहली : हम और ये जानवर ?

मैडम : पिकनिक पर जब आये हो
दूध मलाई खाए हो
लंच बाक्स भी लाए हो
फिर क्या डरना
खेलो खेलो।

सब : क्या ?

बंदर : खो खो। खो खो।

पहला : खो खो के बहाने ये हमें खा लेंगे।

भालू : कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कबड्डी।

पहली : मैडम ! ये तोड़ देंगे हमारी हड्डी।

शेर : अच्छा हां हा हा हा, हाकी।

पहला : ये कर देंगे हमें नाकी।

मैडम : अरे मनाने आये पिकनिक।
करते झिक झिक झिक झिक।।

सब : तो ?

सब जानवर : तो तो तो तो तो तो तैइया।
नाचै नाचै छुम्मक छैइया।

(इसी बीच पर श्यामा चिड़िया सहित सभी जानवरों का नृत्य करना। धीरे-धीरे उनके नृत्य में बच्चों का शामिल होना)

सब मिल ऩाचै गावैं।
सब मिज नाचै गावैं।
ताल पै नाचैं बोल बोल।
बोल पै नाचैं डोल डोल।
छुम्मक छैइया छुम्मक छैइया।
छैइया छैइया छुम छुम।
छुम्मक छैइया छुम छुम।

(नाचते नाचते सारे जानवरों के मुख से एक साथ यह स्वर निकलना—"होइया होइया !")

सब बच्चे : ये क्या ?

चिड़िया : ये देखो नीली झील।

सब : *(बच्चे जानवर सब)* हा। इतनी गहरी।

पहला : लम्बी चौड़ी।

पहली : इतना पानी।

चिड़िया : सुनो कहानी। सुनो कहानी।।
चंदा चंदा,

वो जो आसमान का चंदा
कहते हैं–
एक बार आसमान से
इसी झील में आया।

आवाज

चिड़िया

आवाज

मैडम : सचमुच वह धरती पै आया ?
कौन ले आया ?
कैसे आया ?

मैडम

पहली

चिड़िया : स्पेस शटिल, स्पूटनिक।

सब बच्चे

(ध्वनि प्रभाव)

शेर

सब : पिक पिक पिकनिक
पिक पिक पिकनिक
टिक टिक टिकनिक
ओअ . . . अ . . . अ. . .
ओअ . . . ओअ . . ऊं अ. .

(सबका स्पेस शटिल की तरह पृथ्वी से आसमान और आसमान से झील में उड़ने और पहुँचने का नाट्य)

गुड़म। गुड़म। गुड़म।
झील में चन्द्रमा गुड़म।

सब बच्चे

चिड़िया : चंदामामा सुनुम।

हाथी

बंदर : झील से बाहर निकलुम।

भालू : हुम हुम हुम।

पहला

आवाज : कौन लोग तुम ?

हाथी

मैडम : चंदा मामा की आवाज।

पहली

पहला : मैम, मामा से कहो झील से बाहर आयें।

सब बच्

पहली : हम उनसे मिलेंगे। हसेंगे, नाचेंगे गायेंगे।

हाथी

सब : हाँ चंदा मामा
झील से निकलो।

सब जान

आवाज : ये कौन हैं तुम्हारे साथ ?

चिड़िया

पहला : जानवर–बंदर, भालू शेर।

आवाज : जो साथ हैं वे साथी कि जानवर ?

चिड़िया : बोलो बोलो, नहीं तो चंदा मामा
झील से बारि नहीं आयेंगे।

आवाज : जवाब दो। जो साथ हैं, वे साथी कि जानवर ?

मैडम : बोलो, जवाब दो।

पहली : हाँ, जो साथ वो साथी।

सब बच्चे : जानवर नहीं साथी।

शेर : वो आ रहा हाथी।

(हाथी का गाते नाचते हुए आना)

सभी देश घर मेरा है।
उत्तर दक्खिन पूरब पश्चिम
सभी देश घर मेरा है।
जंगल जंगल नगर डगर
सब जगर मगर
हाँ, सभी देश घर मेरा है।

मान से झील में

सब बच्चे : हाथी काका।

हाथी : बोलो भाई।
का चाहीं ?

पहला : काकाजी, झील मे चंदामामा।

हाथी : तो ?

पहली : झील के ठंडें पानी में चंदा मामा ठिठुर गया। अपनी सूंड़ झील में डालो। मामा को बाहर निकालो।

सब बच्चे : हाँ काका हाँ।

हाथी : *(जानवरों)* से तुम क्या कहो ?

सब जानवर : जो ये कहे, वही हम कहें।

चिड़िया : मैं मैं मैं मैं
हम हैं।

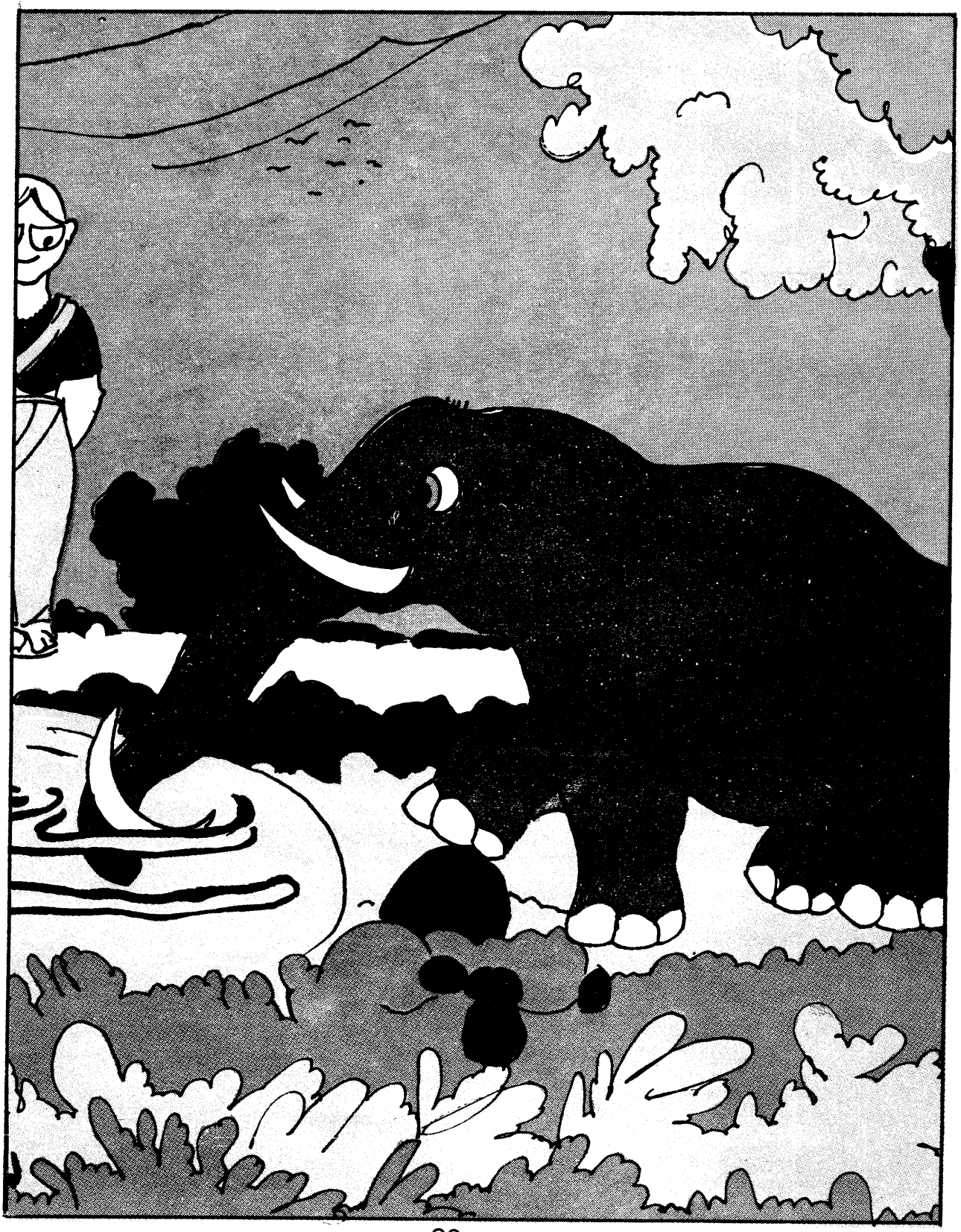

हाथी

सब
चिड़िया

सब बच
चंदा

बच्चे
जानवर
पहला
सब
जानवर
चिड़िय
चंदा
सब
चिड़िय
चंदा

हाथी : अच्छा। तो आवो चंदा मामा।
मेरा सूंड़ थाम कर बाहर आवो।

(हाथी का अपना सूंड झील में लटकाना। चंदा मामा का झील से बाहर आना)

सब : *(बच्चे, जानवर सब एक साथ)* हेलो चंदा मामा।

चिड़िया : चंदा मामा धरती पे आ गए।

(प्रसन्नता पूर्ण नृत्य)

सब बच्चे : चंदा मामा। हाऊ डू यू डू ?

चंदा : आसमान में खड़ा खड़ा
सब तारों से बहुत बड़ा
तुम सब को देखा करता।।
जब तुम हंसते मैं भी हंसता।
जब तुम पढ़ते मैं भी सुनता।
जब तुम रोते मैं भी रोता।
जब तुम सोते मैं भी सोता।।

बच्चे : वाह वाह। वाह वाह। वाह।

जानवर : हा हा हा हा हा।

पहला : चंदा मामा। तुम्हें हमारी पृथ्वी कैसी लगती ?

सब : बोलो। बोलो।

जानवर : चुप क्यों ?

चिड़िया : आमा बोलो चंदा मामा।

चंदा : बोलूं ? पृथ्वी कैसी लगती ?

सब : हाँ बोलो।

चिड़िया : अपने मन का पर्दा खोलो।

चंदा : तो सुनो।

(गायन।)

पृथ्वी उतनी सुंदर
जितने तुम सब सुंदर।

उतन सुदर उतने सुंदर
जितने नदी समुन्दर।
पृथ्वी उतनी सुन्दर
जितने तुम सब सुन्दर।।
उतने सुन्दर जितने जंगल सुंदर
घर सुंदर इस्कूल सुंदर
पृथ्वी उतनी सुंदर।।
जितना मन सुंदर तन सुंदर
तुम्हारे मेरे प्यारे
पृथ्वी उतनी सुंदर।
जितने तुम सब सुंदर।

(इस गायन पर जैसे ही सबका नृत्य सम पर पहुँचना उसी के साथ)

पहला : जैसे हम होंगे वैसी ही होगी हमारी पृथ्वी ?

चंदा : बताओ ! उत्तर दो !

पहली : या जैसी होगी पृथ्वी वैसे होंगे हम ?

चंदा : प्रश्नों का उत्तर तुम्हें देना होगा।

सब : हमें ?

चंदा : हाँ जब फिर हमारी भेंट होगी।

पहला : कब होगी ?

पहली : तुम तो रहते आसमान पर
हम रहते पृथ्वी पर।

चंदा : पृथ्वी मेरा घर है।

सब घर है ? ये कैस्सा ?

चंदा : मैडम से पूछो किस्सा
हम हैं हिस्सा हिस्सा

सब : अच्छा।

चंदा : भारत मेरा घर है
पृथ्वी मेरी माता

पानी मेरी नानी
आसमान है पापा।
सभी जगह मेरा घर
सभी लोग हैं अपने।
जीव जंतु कन कन में
मैं ही बोता सपने।।

शेर : हो हो हो हो।

भालू : बड़ी खुशी हुई मिलकर।

बंदर : चंदा मामा, मैं आपके साथ चलूँगा, यहाँ तो पेड़ नहीं।
पेड़ हैं तो फल नहीं।

शेर : हाँ, जंगल कटते जा रहे।

साथ)

भालू : जंगल मिटते जा रहे।

सब जानवर : हम सब साथ चलेंगे।

चंदा : मेरे साथ ? ना बाबा ना।
वहाँ न हवा न पानी।
न पहाड़ न जंगल
न कुछ खाने को न पीने को।

पहला : फिर तुम कैसे रहते ?
क्या खाते क्या पीते ?

पहली : कैसे जीते ?
कहाँ सोते ?
कहाँ बैठते ?
कैसे जीते ?

चंदा : खाता हूँ सूरज का ताप
पीता हूँ शून्य का भाप।
ये पृथ्वी मेरा ही अंग।
रहते सदा इसी के संग।।

चिड़िया : चलो चलें हम खेलें खेल
एक ओर तुम सब, एक ओर तुम।
एक ओर ये, एक ओर तुम।।
रेफरी मैं।

हाथी : क्या खेल ?

बंदर : आइस पाइस।

सब : वेरी नाइस।

(चिड़िया का सीटी बजाना, खेल शुरू। चाँद को ही सब ढूंढने के लिए चुनते है। चाँद के प्रकाश से कोई छिप नहीं पाता। सब को चाँद का आइस पाइस करना)

(गायन)

चाँद : शाम हुई सबको घर जाना।
पहले तुम सब जाओ।
पिकनिक खतम हुई घर जाना
शाम हुई सबको घर जाना।

सब जानवर : अच्छा, नमस्ते नमस्ते

बच्चे : हम सब साथी अच्छे।

चाँद : और मैं ?

(गान)

चंदा चंदा आसमान का चंदा।
सचमुच धरती पर आये।
खेल खेल में।
कितनी खुशियां लाये।
सबसे हमें मिलाये।

चाँद : अच्छा प्रणाम,
फिर मिलेंगे।
प्रश्न का उत्तर लाना।
भाग न जाना।।

सब : हाँ फिर मिलेंगे
आयेंगे आयेंगे,
उत्तर लायेंगे।
फिर आयेंगे।।

पहला : चंदा मामा। और प्रश्न करना।

सब : हम उत्तर देंगे।

आयेंगे आयेंगे।
उत्तर लायेंगे।

पहला : झील में छिप न जाना

सब : आना आना चंदा मामा।

पहली : प्रश्न लाना, लाना चंदा मामा।

पहला : बंदर भाई, हाथी बाबा, भालू चाचा, शेर दादा . . . . . .।

सब : बाई . . . . . बाई।
भाई . . . . भाई।।

चिड़िया : फिर मिलेंगे।

चंदा : फिर जुड़ेंगे।

सब : बाई। बाई
भाई भाई
मामा मामा
काका काका
बाबा बाबा
दादा दादा
मामा मामा
भाई भाई
बाई बाई . . . . .।

(. . . . पर्दा)

3. बंदर का खेल

पात्र : **बंदर, बंदरिया, पहलवान, मैडम**

(मंच पर प्रकाश आते ही बच्चे दिखते है। वे ऊधम कर रहे हैं। शोर मचा हुआ है चारों तरफ। उनके ही बीच अकेली मैडम बेतरह परेशान। अचानक वह सीटी बजाती है। बच्चे शांत और सावधान होने लगते हैं।)

मैडम : अच्छा ! अब हम खेलेंगे। क्या खेलेंगे ?

बच्चे : *(एक साथ)* खेल।

मैडम : चलो, हम खेल खेलें। दौड़ो मेरे पीछे पीछे। मेरे आगे-आगे।

(बच्चे मंच पर अर्धचंद्राकार रूप में खड़े हो जाते हैं। मैडम डमरू बजाकर।)

मैडम : अब कौन बनेगा बंदर ?

अभिनव : मैं, अभिनव।

मैडम : कौन बनेगी बंदरिया ?

सिल्की : मैं, सिल्की।

अभय : नहीं मैं–अभय।

सिल्की : नहीं मैं।

अभय : नहीं मैं।

(दोनों 'मैं-मैं' करने लगते हैं। सारे बच्चे 'मैं-मैं' करते हैं। मैं-मैं पर डमरू का संगीत छा जाता है। इसी बीच अभिनव बंदर, सिल्की बंदरिया और अभय पहलवान बन कर आते हैं।)

पहलवान : अरे बंदर ! तेरा मुँह जैसे छछुंदर !

(बंदर गुस्से में काटने दौड़ता है।)

पहलवान : अरे, इसमें गुस्सा करने की क्या जरूरत ? ले लगा ले टोपी, ले लगा ले मूंछ, ले लगा ले टाई ! ले चश्मा, ले डंडा, ले पाउडर, ले मेकअप कर ले।

(बंदर सज जाता है।)

पहलवान :
बंदर :
पहलवान :

पहलवान : अरे रे रे, कहाँ चला बन-ठन के ?

बंदर : शादी करने।

पहलवान : बंदर चला बंदरिया देस। देखो इसका कैसा भेस।

बंदरिया : खों खों खों।

बंदर : अरे मैं तेरी गली में आया।

बंदरिया : बेसुरा गाया।

बंदर : क्या कहा ? मैं बेसुरा ? तू बेसुरी।

बंदरिया : तेरी यह हिम्मत !

(दोनों में मारपीट। पहलवान बचाता है।)

पहलवान : तो दोनों रूठ गये !

पहलवान : भई बंदर, अक्ल के समुंदर। जाओ बंदरिया को मनाओ, दिल की बात सुनाओ।

(बंदर का पहलवान के कान में कुछ कहना।)

पहलवान : जा-जा। तू जा। अरे जा तो सही।

(बंदर, बंदरिया के पास जाता है। शर्माता है। डरता है। भाग आता है। पहलवान से संकेतों में बातें। फिर जाता है। पहलवान संकेत करता है।)

बंदर : *(मारे संकोच -डर के)* अरे सुनती हो।

पहलवान : जोर से ! . . . . थोड़ा और ऊँचा. . . .

बंदर : *(चिल्लाकर)* अरे सुनती हो।

बंदर : मैं तुझसे शादी करना चाहता हूँ।

(बंदरिया का मैडम के कान में कुछ कहना।)

मैडम : कह रही है, तेरे मुँह से बदबू आती है। सुबह ब्रुश नहीं करता, मुँह-हाथ नहीं धोता और ठीक से नहाता भी नहीं।

(बंदर मारने दौड़ता है बंदरिया को। पहलवान रोकता है। बंदरिया का फिर मैडम के कान में कुछ कहना।)

मैडम : अच्छा। कहती है—बड़ा गुस्सैल है। हर वक्त खों खों खों करता है। चीजें फेंकता रहता है। तोड़ -फोड़ . . . . .

बंदर : जा-जा. . . बड़ी बनती है, तुझसे शादी नहीं करूंगा।

पहलवान : *(रोकता है)* अरी बंदरिया, मेरी मान, शादी कर ले।

(बंदरिया का मैडम के कान में कहना।)

मैडम : पूछ रही है— दहेज तो नहीं माँगोगे ?

बंदर

बंदरिया

मैडम

बंदरिया

मैडम

मैडम

बंदर : नहीं मांगूंगा।

बंदरिया : मेरी इज्जत करोगे न ?

(बंदर डंडा दिखाता है। बंदरिया भी डंडा दिखाती है।)

मैडम : बस, बस अब शादी पक्की !

बंदरिया : नहीं।

(मैडम के कान में कहना।)

मैडम : पूछ रही है—मनुष्य हो कि बंदर ? बोलो, क्या हो ? ओ हो, अभी बंदर हो। *(फिर कान में बंदरिया का कुछ कहना।)* यह बंदर से शादी नहीं करेगी ?

(बंदर का मैडम के कान में कहना।)

मैडम : बहुत अच्छे. . . बहुत अच्छे। यह बंदर नहीं है, बंदर का रूप बनाये हुए है। जाओ, उसके कान में कहो।

(बंदर और बंदरिया का एक-दूसरे के कान में कुछ कहना। मैडम का डमरू बजाना। विवाह का संगीत उठना। दूल्हा-दुल्हन और बारात का चलना।)

(खेल खत्म)